परमेश्वर एक
भला परमेश्वर है

आशीष रायचूर

Back Cover

परमेश्वर के विषय में हमारी तस्वीर विभिन्न स्रोतों के द्वारा विकसित होती है–अन्य लोगों ने परमेश्वर के विषय क्या कहा है, हमारे अनुभवों, आभासों, अध्ययन, विश्लेषण आदि के परिणाम। परन्तु इनमें से सब बातें ठीक नहीं हो सकती हैं। पिछले अनुभवों के आधार पर हम परमेश्वर के विषय में बहुत से पक्षपातपूर्ण विचार, विशुद्ध धारणाएँ और गलत अर्थ रखते हैं कि परमेश्वर कौन है, वह क्या और कैसे काम करता है। कभी-कभी तो जो हमने धार्मिक स्थलों पर, और धार्मिक पुस्तकों में पढ़ा है वह भी परमेश्वर को गलत रूप से प्रस्तुत करता है और परिणामस्वरूप परमेश्वर की तस्वीर हमारे समक्ष गलत होती है। कई बार हम यह भी सोचते हैं कि परमेश्वर निर्दयी और बड़ा कठोर है।

यह पुस्तक परमेश्वर की एक ताजा तस्वीर बनाती है, बाइबल से यह प्रकट करते हुए कि परमेश्वर एक भला परमेश्वर है।

आशीष रायचूर

© आशीष रायचूर, पास्टर
ऑल पीपुल्स चर्च एवं विश्व सुसमाचार सम्पर्क
प्रथम प्रकाशन मुद्रित 2009 जुलै

प्रबन्ध सम्पादक/मुख्य प्रकाशक : वैलेन्टीना हूबर्ट
सहायक सम्पादक : आरती रेचल यशायाह
अनुवाद एवं प्रूफरीडिंग : सुनील एस. लाल
मुख पृष्ठ एवं ग्राफिक्स डिज़ाइन : करुणा जयरोम, बाईफेथ डिज़ाइन्स

पत्राचार का पता:
ऑल पीपुल्स चर्च एवं विश्व सुसमाचार सम्पर्क
सोभा जेड A216
जक्कूर, बंगलौर-560064
कर्नाटक, भारत

फोन + 91-80-23544328
ईमेल : contact@apcwo.org
बेबसाइट : www.apcwo.org

निशुल्क वितरण हेतु

इस पुस्तक का निशुल्क वितरण ऑल पीपुल्स चर्च के सदस्यों, सहभागियों और मित्रों के आर्थिक अनुदानों के द्वारा सम्भव हुआ है।

परमेश्वर एक
भला परमेश्वर है

विषय-वस्तु

1. परमेश्वर के विषय में हमारी तस्वीर 1

2. परमेश्वर की सत्य तस्वीर बेपरद है 2

3. परमेश्वर के विषय में महत्वपूर्ण सत्य 4

4. परमेश्वर एक भला परमेश्वर है 7

5. यीशु मसीह—अदृश्य परमेश्वर का सही प्रतिरूप 10

1

परमेश्वर के विषय में हमारी तस्वीर

परमेश्वर के विषय में हमारी तस्वीर विभिन्न स्रोतों के द्वारा विकसित होती है—अन्य लोगों ने परमेश्वर के विषय क्या कहा है, हमारे अनुभवों, आभासों, अध्ययन, विश्लेषण आदि के परिणाम। परन्तु इनमें से सब बातें ठीक नहीं हो सकती हैं। उदारहण के लिए, बीमा करने वाली कम्पनियाँ प्राय: अचानक आने वाली विपत्तियों को खराब मौसम से जोड़ देते हैं—भूकम्प, चक्रवात और प्रचण्ड तूफान—वे इन्हें "ईश्वर की क्रिया" कहते हैं। जब हम इस प्रकार की चर्चा को सुनते हैं तो हम परमेश्वर के विषय में गलत समझ का विकास करते हैं। हम यह समझने लगते हैं कि यह परमेश्वर ही है जो समय समय पर चक्रवात, भूकम्प और अन्य विपत्तियाँ लाता है।

उद्धार पाने और लम्बे समय तक मसीही होने के बाद भी परमेश्वर के विषय में हमारी तस्वीर धुंधली, अपूर्ण और गलत होती है। हमारे पास परमेश्वर की सही तस्वीर नहीं है। पिछले अनुभवों के आधार पर हम परमेश्वर के विषय बहुत से पक्षपातपूर्ण विचार, विशुद्ध धारणाएँ और गलत अर्थ रखते हैं कि परमेश्वर कौन है, वह क्या और कैसे काम करता है। कभी-कभी तो जो हमने धार्मिक स्थलों पर, और धार्मिक पुस्तकों में पढ़ा है वह भी परमेश्वर को गलत रूप से प्रस्तुत करता है और परिणामस्वरूप परमेश्वर की तस्वीर हमारे समक्ष गलत होती है। हम यहाँ तक सोच सकते हैं कि हम सही हैं, परन्तु वास्तव में परमेश्वर के विषय हमारी तस्वीर गलत हो सकती है।

2

परमेश्वर की सत्य तस्वीर बेपरद है

क्योंकि उसके अनदेखे गुण, अर्थात् उस की सनातन सामर्थ, और परमेश्वरत्व जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते हैं, यहां तक कि वे निरुत्तर हैं। इस कारण कि परमेश्वर को जानने पर भी उन्होंने परमेश्वर के योग्य बड़ाई और धन्यवाद न किया, परन्तु व्यर्थ विचार करने लगे, यहां तक कि उन का निर्बुद्धि मन अन्धेरा हो गया। वे अपने आपको बुद्धिमान जताकर मूर्ख बन गए। और अविनाशी परमेश्वर की महिमा को नाशमान मनुष्य, और पक्षियों, और चौपायों, और रेंगनेवाले जन्तुओं की मूरत की समानता में बदल डाला (रोमियों 1:20-23)।

परमेश्वर का स्वभाव हमारे लिए उसकी सृष्टि में प्रकट किया गया है। उसका अदृश्य परमेश्वरत्व उसकी अनन्त सामर्थ और महानता उसकी सृष्टि में स्पष्ट दिखाई देती है। सृष्टि स्वयं इसके रचयिता की महिमा के विषय बताती है (भजन संहिता 19:1-3)। परन्तु दुख की बात है कि लोग 'सृष्टिकर्ता' के बजाय 'सृष्टि' की आराधना करने लगे। यद्यपि हम सृष्टिकर्ता के बारे में उसकी सृष्टि को देखने के द्वारा जान सकते हैं, परन्तु हमे बहुत सावधान रहना चाहिए कि हम कहीं उसकी सृष्टि में से ही एक ईश्वर न बना लें।

हर एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है (2 तीमुथियुस 3:16)।

सृष्टि के अतिरिक्त हमारे पास परमेश्वर का वचन-बाइबल है-जो हमारे समक्ष परमेश्वर की सही तस्वीर प्रकट करती है, क्योंकि बाइबल ऐसी पुस्तक है जिसे परमेश्वर ने लिखा है। समस्त धर्मशास्त्र हमें परमेश्वर की प्रेरणा से दिया गया है। हम जानते हैं कि सारा धर्मशास्त्र परमेश्वर की श्वांस और परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है। परमेश्वर का हाथ उन

लोगों पर था जिन्होंने इसे लिखा है और इसलिए बाइबल परमेश्वर के स्वयं का प्रकाशन है कि वह कौन है—उसके गुण और उसकी उपाधियाँ।

हम बाइबल में परमेश्वर के बहुत से गुणों और उपाधियों के बारे में पढ़ते हैं :

- परमेश्वर का स्वयं का अस्तित्व है—परमेश्वर अपने अस्तित्व हेतु किसी अन्य स्रोत पर निर्भर नहीं है।
- परमेश्वर अनन्त काल तक है—समय से पहले परमेश्वर था और वह सदा सर्वदा तक रहेगा।
- परमेश्वर सृष्टिकर्ता है—परमेश्वर ने सब कुछ बनाया है।
- परमेश्वर सर्वशक्तिमान है—वह सबसे अधिक सामर्थी है।
- परमेश्वर के पास सारी बुद्धि और सारा ज्ञान है—वह सर्वज्ञानी है।
- वह सब जगह सब समय उपस्थित है—वह सर्वव्यापी है। उसकी उपस्थिति को समय और स्थान नियन्त्रित नहीं कर सकता है।
- परमेश्वर व्यक्तिगत आत्मा है—वह आत्मा है परन्तु वह व्यक्ति है। उसकी भावनाएं और इच्छाएं हैं।
- परमेश्वर असीमित है—परमेश्वर सारे परिमाणों के बाहर है।
- परमेश्वर अपरिवर्तनीय है—वह बदलता नहीं है। हम वृद्ध होते हैं और हमारे व्यक्तित्व में भी परिर्वतन आते हैं। परन्तु परमेश्वर एक सा ही है। उसे परिपक्व होने की आवश्यकता नहीं है।
- परमेश्वर सम्प्रभुसत्तापूर्ण है—उसे आपको और मेरी सलाह की आवश्यकता नहीं है। वह वही करता है जिसमें वह आनन्दित होता है।
- परमेश्वर पवित्र है।
- परमेश्वर धर्मी है।
- परमेश्वर न्यायी है।
- वह सत्य का परमेश्वर है।
- वह प्रेमी परमेश्वर है।
- वह भलाई का परमेश्वर है-परमेश्वर भला परमेश्वर है और हम परमेश्वर की इसी उपाधि पर अगले अध्यायों में चर्चा करेंगे।

3

परमेश्वर के विषय में महत्वपूर्ण सत्य

यहाँ कुछ महत्वपूर्ण सत्य परमेश्वर के विषय में हैं :

परमेश्वर की इच्छी सदैव उसके स्वभाव से मेल खाती है–उससे कि वह कौन है

यदि हम यह जानते हैं कि परमेश्वर कौन है, तो हम यह भी जान लेंगे कि उसकी इच्छा क्या है। उसकी इच्छा हमारे विषय में उसके स्वभाव के विपरीत कभी नहीं हो सकती है–अथवा उससे कि वह कौन है। यदि हम कभी कहते हैं कि हम परमेश्वर की इच्छा नहीं जानते हैं, तो यह हो सकता है कि हम नहीं जानते कि वह कौन है। उदाहरण के लिए, हम उपवास और प्रार्थना इसलिए नहीं करते कि यह पता करें कि क्या उसकी इच्छा है कि वह पाप क्षमा करे। हम केवल प्रभु के पास जाते हैं यह जानते हुए कि उसका स्वभाव पाप क्षमा करने का है और परमेश्वर पाप क्षमा करेगा। यही बात एक बीमार व्यक्ति के बारे में भी लागू होती है। यह परमेश्वर की इच्छा है कि वह बीमार को चंगा करे क्योंकि वह चंगा करने वाला है और उसकी इच्छा उसके स्वभाव से मेल खाती है, क्योंकि वह कभी भी अपने स्वभाव का विरोध नहीं करेगा। अत: उसकी इच्छा है कि प्रत्येक बीमार व्यक्ति को वह चंगा करे। उसने कहा, ''मैं यहोवा राफा हूँ,'' इसके द्वारा उसने चंगा करने वाले परमेश्वर के रूप में अपना स्वभाव प्रकट किया।

परमेश्वर सब कुछ अपने स्वभाव और चरित्र के अनुरूप करता है।

अत: यदि हम यह जानते हैं कि वह कौन है, तो हम यह भी जानेंगे कि वह क्या करता है। वे लोग जो विवाहित हैं इस बात को भली प्रकार समझ जाएंगे। मेरी पत्नि, एमी बता सकती है कि एक विशेष परिस्थिति में क्या

सोचता हूँ। मैं कैसा व्यवहार करता हूँ और मैं क्या करता हूँ, क्योंकि वह मुझे जानती है। इतने समय के दौरान उसने मेरा स्वाभव और चरित्र समझ लिया है। इसी प्रकार, जब हम परमेश्वर को जानते हैं, हम जान जाते हैं कि वह क्या करता है। जो कुछ भी वह करता है वह सब कुछ उसके स्वभाव और चरित्र के अनुरूप होता है।

जैसा हमने पहले कहा है, बाइबल हमारे समक्ष परमेश्वर को प्रकट करती है। अत: वह हमारे लाभ के लिए ही है कि हम बाइबल पढ़कर यह समझें कि परमेश्वर कौन है और उसका स्वभाव व चरित्र कैसा है।

परमेश्वर कभी ऐसा नहीं करता और कहता है जो उसके स्वयं के स्वभाव और चरित्र का विरोधाभासी हो

परमेश्वर यह नहीं कहता है, "मैं सत्य का परमेश्वर हूँ, परन्तु मैं कभी कभी झूठ बोलता हूँ।" वह यह कभी नहीं कह सकता, "मैं भला परमेश्वर हूँ परन्तु कभी कभी मैं बुरे काम करता हूँ।" अत: वह अपने स्वभाव के विरोध में कुछ नहीं करेगा। इससे हमारे लिए यह आसान हो जाता है कि यह परमेश्वर की ओर से है, शैतान की ओर से अथवा मेरे स्वयं को ओर से। इससे यह निश्चय करना आसान हो जाता है, कि जो हम सुन रहे हैं क्या वह परमेश्वर के स्वभाव और चरित्र के अनुरूप है, तब वह परमेश्वर की ओर से है। यदि यह उसके स्वभाव के विपरीत है, तो यह परमेश्वर की ओर से नहीं है। अत: यदि हम जानते हैं कि वह कौन है तो हम जान लेंगे कि वह क्या कहता है और क्या करता है।

परमेश्वर की शक्ति असीमित है तौभी कुछ कार्य हैं जो परमेश्वर नहीं करेगा

परमेश्वर ने घोषणा की है कि कुछ ऐसे कार्य हैं जिन्हें वह नहीं करेगा। उदाहरण के लिए :

- परमेश्वर अपना इन्कार नहीं कर सकता (2 तीमुथियुस 2:13)।
- वह झूठ नहीं बोल सकता (तीतुस 1:2)।

- वह पाप नहीं कर सकता (याकूब 1:13)।

वह ये कार्य नहीं कर सकता है क्योंकि ये उसके स्वभाव के विपरीत हैं। वह कभी भी अविश्वासयोग्य नहीं हो सकता, झूठ नहीं बोल सकता अथवा प्रेम करना बन्द नहीं कर सकता है।

परमेश्वर मनुष्य की भेदज्ञान की स्वतन्त्र इच्छा (चुनाव करने की इच्छा) के ऊपर अपनी इच्छा नहीं थोपेगा

अपनी सम्प्रभुसत्ता सम्पन्नता में परमेश्वर ने यह चुनाव किया है कि वह हमारी भेदज्ञान की स्वतन्त्र इच्छा, हमारी अच्छे-बुरे को चुनने की इच्छा पर अपना अधिकार न रखे। इसी लिए उसने आदम और हव्वा को पाप करने से नहीं रोका। यदि परमेश्वर हमारी भेद ज्ञान की स्वतन्त्र इच्छाओं पर अधिकार रखता तो हम मानव प्राणी नहीं बल्कि रोबोट (यन्त्र मानव) होते। और परमेश्वर ने रोबोट की सृष्टि नहीं की। उसने मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाया और उन्हें स्वतन्त्र इच्छा दी। वह हमारी स्वतन्त्र इच्छाओं के ऊपर अपनी इच्छा नहीं थोपेगा—हमारी चुनाव करने की इच्छा पर। वह हमारी इच्छा को प्रभावित करेगा, सुधारेगा, मार्गदर्शन करेगा, हममें काम करेगा, अपना वचन देगा, अपनी आत्मा से हमें सामर्थी बनाएगा परन्तु हमारे लिए चुनाव कभी नहीं करेगा। इसीलिए परमेश्वर लोगों को नर्क में जाने की अनुमति देता है। उसकी यह इच्छा है कि सब लोग बचाए जाएं, परन्तु लोग फिर भी चुनाव करते हैं कि वे नर्क में जाएं। परमेश्वर ने कभी कुछ लोगों से नहीं कहा कि वे नर्क में जाएं और अन्य लोगों से कि वे स्वर्ग में जाएं। यह पक्षपात होगा। लोग स्वयं चुनाव करते हैं। अतः जब हम कहते हैं कि परमेश्वर नियन्त्रण करता है तो सामान्य रूप से यह सही है। परन्तु विशेषरूप से, हमारी स्वतन्त्र इच्छाओं और चुनावों पर परमेश्वर नियन्त्रण नहीं करता है जिन्हें हम इस पृथ्वी पर करते हैं। यदि हम कुछ ऐसा करने का निर्णय करते हैं जो वास्तव में मूर्खतापूर्ण और विनाशकारी है—तो यह हमारा चुनाव है।

4

परमेश्वर एक भला परमेश्वर है

परमेश्वर के विषय में बहुत सी बातें जो बाइबल में हमारे लिए प्रकट की गई हैं उनमें एक सत्य है जो पूरे धर्मशास्त्र में दोहराया गया है वह है—**परमेश्वर एक भला परमेश्वर है।**

परखकर देखो कि यहोवा कैसा भला है! क्या ही धन्य है वह पुरुष जो उसकी शरण लेता है (भजन संहिता 34:8)।

क्योंकि यहोवा भला है, उसकी करुणा सदा के लिये, और उसकी सच्चाई पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहती है (भजन संहिता 100:5)।

यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि वह भला है; और उसकी करुणा सदा की है! लोग यहोवा की करुणा के कारण, और उन आश्चर्यकर्मों के कारण, जो वह मनुष्यों के लिये करता है, उसका धन्यवाद करें! (भजन संहिता 107:1,8)।

जब सब कुछ ठीक होता है तो हम सामान्यत: परमेश्वर को धन्यवाद देते हैं और उसकी भलाई के लिए उसकी प्रशंसा करते हैं। फिर भी सब कुछ ''ठीक'' नहीं होता तो हम सोचने लगते हैं कि अब परमेश्वर भला नहीं रहा। जब हम प्रात:काल कुछ घण्टों तक प्रार्थना करते हैं तो हम सोचते हैं कि उस दिन परमेश्वर हमारे लिए बहुत अच्छा होगा। परन्तु अगले दिन जब हम केवल कुछ मिनट तक प्रार्थना करते हैं तो हम सोचते हैं कि उस दिन वह हमारे लिए भला परमेश्वर नहीं होगा। हम सब कभी न कभी ऐसा सोचने के दोषी पाए जाते हैं कि परमेश्वर की भलाई इस बात पर निर्भर है कि हम कितने समय तक प्रार्थना करते हैं! परन्तु परमेश्वर भला है क्योंकि वह ऐसा ही है और हमारे लिए भला बना रहेगा, चाहे हम प्रार्थना करें या न करें।

हममें से कुछ लोग सोचते हैं कि परमेश्वर केवल मसीहियों के लिए

ही भला है, परन्तु वचन कहता है :

यहोवा अनुग्रहकारी और दयालु, विलम्ब से क्रोध करनेवाला और अति करुणामय है। यहोवा सभों के लिये भला है, और उसकी दया उसकी सारी सृष्टि पर है (भजन संहिता 145: 8,9)।

परमेश्वर सबके लिए भला है। उन लोगों के लिए भी जो हमें सताते हैं। परमेश्वर पापी के लिए भी भला है न कि सिर्फ चर्च जाने वालों के लिए ही!

जिससे तुम अपने स्वर्गीय पिता की सन्तान ठहरोगे क्योंकि वह भलों और बुरों दोनों पर अपना सूर्य उदय करता है, और धर्मियों और अधर्मियों दोनों पर मेंह बरसाता है (मत्ती 5:45)।

इसीलिए हम पापियों के लिए प्रार्थना कर सकते हैं जो आज उलझन में पड़े हैं और प्रभु से प्रार्थना कर सकते हैं कि वह अपनी भलाई उन पर उण्डेले। परमेश्वर सब के लिए भला है। इसलिए एक पापी को यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि अपने आप को साफ सुथरा करे और सब बातें ठीक करके कलीसिया में चले ताकि परमेश्वर उसके साथ भलाई कर सके। परमेश्वर ''यहोवा सभों के लिये भला है, और उसकी दया उसकी सारी सृष्टि पर है'' (भजन संहिता 145:9)। एक पापी को जैसा वह है उसी हालत में परमेश्वर के पास आने दीजिए–पाप में, उलझन आदि में–और परमेश्वर की भलाई उसे पश्चाताप् की ओर ले आएगी (रोमियों 2:4)।

क्योंकि परमेश्वर एक भला परमेश्वर है, वह चाहता है कि हमें अच्छी वस्तुएं दे। वह ऐसा कहकर अपना विरोधाभास नहीं कर सकता, ''मैं एक भला परमेश्वर हूँ परन्तु मैं तुम्हारे लिए बुरी-बुरी चीजें चाहता हूँ।'' वह जो कुछ **कहता, करता** और **इच्छा** करता है वे सदैव भली होती हैं।

क्योंकि परमेश्वर एक भला परमेश्वर है वह उदारता से देने वाला है

मांगो, तो तुम्हें दिया जाएगा; ढूंढ़ो, तो तुम पाओगे; खटखटाओ, तो तुम्हारे

लिये खोला जाएगा। क्योंकि जो कोई मांगता है, उसे मिलता है; और जो ढूंढ़ता है, वह पाता है? और जो खटखटाता है, उसके लिये खोला जाएगा। तुम में से ऐसा कौन मनुष्य है, कि यदि उसका पुत्र उस से रोटी मांगे, तो वह उसे पत्थर दे? वा मछली मांगे, तो उसे सांप दे? सो जब तुम बुरे होकर, अपने बच्चों को अच्छी वस्तुएं देना जानते हो, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता अपने मांगनेवालों को अच्छी वस्तुएं क्यों न देगा? (मत्ती 7:7-11)।

यदि सांसारिक पिता अपने बच्चों को अच्छी वस्तुएं दे सकते हैं, तब परमेश्वर के पित्र-हृदय को कम न आंकें। परमेश्वर ही अन्तत: पिता है। और यदि हम जो बुरे हैं, अपने बच्चों को ऐसा प्रेम करते और उनकी चिन्ता करते हैं तब मैं आपको निश्चय दिला सकता हूँ कि परमेश्वर, जो असीमित महान है, वह अपने बच्चों के लिए अच्छी वस्तुएं चाहता है!

क्योंकि हर एक अच्छा वरदान और हर एक उत्तम दान ऊपर ही से है, और ज्योतियों के पिता की ओर से मिलता है, जिस में न तो कोई परिवर्तन हो सकता है, और न अदल बदल के कारण उस पर छाया पड़ती है। (याकूब 1:17)

क्योंकि यहोवा परमेश्वर सूर्य और ढाल है; यहोवा अनुग्रह करेगा, और महिमा देगा; और जो लोग खरी चाल चलते हैं, उन से वह कोई अच्छा पदार्थ रख न छोड़ेगा (भजन संहिता 84:11)

परमेश्वर उत्तम और सिद्ध वरदानों को देने वाला है। वह अच्छी वस्तुएं हमसे छिपा कर नहीं रखेगा।

5

यीशु मसीह–अदृश्य परमेश्वर का सही प्रतिरूप

वह तो अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप .... (कुलुस्सियों 1:15 अ)।

....मसीह जो परमेश्वर का प्रतिरूप है (2 कुरिन्थियों 4:4)।

वह उसकी महिमा का प्रकाश, और उसके तत्व की छाप है, और सब वस्तुओं को अपनी सामर्थ के वचन से संभालता है : वह पापों को धोकर ऊंचे स्थानों पर महामहिम के दहिने जा बैठा (इब्रानियों 1:3)।

यीशु परमेश्वर के व्यक्तित्व, उसकी इच्छा, उसके मन और भावनाओं का सही प्रतिरूप है। जब यीशु पृथ्वी पर चले फिरे थे उन्होंने कभी बुराई नहीं की। जब बीमार उसके पास आए, उसने उन्हें भगाया नहीं बल्कि उन सभों को चंगा किया। उसने रोटी और मछलियों को बढ़ाया और लोगों को खाना खिलाया–उनकी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति की। इस प्रकार उसने दिखाया कि परमश्वेर कैसा है वह वास्तव में हमारे इस पृथ्वी पर के जीवनों में रुचि रखता है।

और देखो, उस देश से एक कनानी स्त्री निकली, और चिल्लाकर कहने लगी; हे प्रभु दाऊद की सन्तान, मुझ पर दया कर, मेरी बेटी को दुष्टात्मा बहुत सता रहा है (मत्ती 15:22)।

और देखो, दो अन्धे, जो सड़क के किनारे बैठे थे, यह सुनकर कि यीशु आ रहा है, पुकारकर कहने लगे; कि हे प्रभु, दाऊद की सन्तान, हम पर दया कर। (मत्ती 20:30)

कनानी स्त्री और अंधे व्यक्ति ने यीशु की दया की मांग की और उसकी भलाई में, उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति हो गई और वे चंगे हो गए। यीशु अदृश्य परमेश्वर का सही प्रतिरूप और उसका सत्य प्रकटीकरण

है कि परमेश्वर कैसा है। हम भी परमेश्वर की भलाई की माँग कर सकते हैं और प्रतिदिन उसकी भलाई का अनुभव कर सकते हैं।

अपने आपको इन बातों के विषय में याद दिलाएं

- परमेश्वर की इच्छा सदैव उसके स्वभाव के अनुरूप होगी—कि वह कौन है।

  अतः यदि आप जानते हैं कि वह कौन है, तब आप यह भी जानेंगे कि उसकी इच्छा क्या है। कुछ लोगों को परमेश्वर की इच्छा जानने में डर लगता है कि कहीं वह डरावनी तो नहीं है। परमेश्वर की इच्छा के प्रति समर्पण आपके जीवन की सबसे अच्छी बात है। क्योंकि उसकी इच्छा आपके लिए सदैव भली है। प्रसन्न हो जाएं!

- परमेश्वर सब कुछ अपने स्वभाव और चरित्र के अनुरूप करता है।

  अतः यदि आप जानते हैं कि वह कौन है, तो आप यह भी जान लेंगे कि वह क्या करता है। आप हियाव के साथ कह सकते हैं कि परमेश्वर भले काम करता है। जी हाँ, वह आपको चेतावनी देगा और सुधार करेगा परन्तु यह सब कुछ आपकी भलाई के लिए ही होगा!

- परमेश्वर ऐसा कुछ नहीं कहता है और न करता है जो उसके स्वयं के स्वभाव और चरित्र के विरोध में हो!

  परमेश्वर आपको बुरी बातें कभी नहीं कहेगा न ही भविष्यवाणी करके कहेगा, "तुम नरक में जाओगे।" वह केवल अच्छी बातें ही बोलता है और भलाई करता है। परमेश्वर इतना भला है कि वह बुराई कर ही नहीं सकता, इतना बुद्धिमान है कि कभी गलती नहीं करता है, इतना सच्चा है कि आपसे कभी झूठ नहीं बोलेगा और इतना शक्तिशाली है कि आपको गिरने नहीं देगा!

परन्तु यदि परमेश्वर एक भला परमेश्वर है तो इतनी बुरी बातें इस संसार में क्यों हो रही हैं?

प्रतिदिन समाचार पत्र हमें ऐसे लोगों की मृत्यु का समाचार सुनाते हैं जो प्राकृतिक आपदा जैसे बाढ़, प्रचण्ड तूफानों और अन्य कारणों जैसे

आतंकवादी कार्यविधियों, अपराधों जो नगरों में हो रहे हैं, के परिणामस्वरूप मर रहे है। अतः यदि परमेश्वर एक भला परमेश्वर है तो ये सब बुरे कार्य क्यों होते हैं? और बुरे काम भले लोगों के साथ क्यों होते हैं?

परमेश्वर भला परमेश्वर है लेकिन इस पृथ्वी पर बुरी दुष्टात्मा (शैतान) है। यह शैतान ही है जो लोगों को बुराई करने के लिए उकसाता है और प्रभावित करता है। दुख की बात है, लोग जाने में और अनजाने में शैतान के दूत बनकर इस पृथ्वी पर बुरे काम करते हैं। शैतान ने इस संसार में आदम के पाप के द्वारा प्रवेश किया। पृथ्वी आदम को दी गई थी और आदम ने परमेश्वर की आज्ञा न मानने के द्वारा इसका अधिकार शैतान के हाथों में हस्तान्तरित कर दिया। तौभी यह एक सीमित समय के लिए ही है। इसीलिए शैतान इस समय बहुत तेजी से अपना काम कर रहा (प्रकाशितवाक्य 12:12)। 'एक समय' (मत्ती 8:29) आएगा जब शैतान का अधिकार समाप्त होगा और उसकी दुष्टात्माएं पृथ्वी पर से निकाल दी जाएंगी। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में प्रकट किया गया है कि परमेश्वर ने शैतान और उसकी दृष्टात्माओं के लिए क्या योजना बनाई है (प्रकाशितवाक्य 20:10,14)।

फिर एक दिन वह और उसके चेले नाव पर चढ़े, और उसने उनसे कहा; कि आओ, झील के पार चलें : सो उन्होंने नाव खोल दी। पर जब नाव चल रही थी, तो वह सो गया : और झील पर आन्धी आई, और नाव पानी से भरने लगी और वे जोखिम में थे तब उन्होंने पास आकर उसे जगाया, और कहा; स्वामी! स्वामी! हम नाश हुए जाते हैं : तब उसने उठकर आन्धी को और पानी की लहरों को डांटा और वे थम गए, और चैन हो गया। और उसने उनसे कहा; तुम्हारा विश्वास कहां था? पर वे डर गए, और अचम्भित होकर आपस में कहने लगे, यह कौन है? जो आन्धी और पानी को भी आज्ञा देता है, और वे उसकी मानते हैं (लूका 8:22-25)।

यीशु और उसके चेले तूफान में घिर गए थे (लूका 8:22-25)। स्वाभाविक रूप से चेले जो कर सकते थे वह उन्होंने किया। जब उन्हें कुछ सफलता नहीं मिली और उन्होंने सोचा कि अब हम डूब ही जाएंगे, तो उन्होंने यीशु को जगाया। यीशु अन्तिम प्रार्थना करने के लिए खड़े नहीं

हुए यह मानकर कि यह परमेश्वर की अन्तिम इच्छा है कि ये तूफान में घिर कर मर जाएं। बल्कि उसने हियाब के साथ हवाओं और तूफान का डांटा और वह थम गया। हमें ये प्रश्न पूछने की आवश्यकता है–तूफान का कारण कौन था? क्या यह परमेश्वर था, अथवा शैतान या प्रकृति अपना काम कर रही थी?

यह परमेश्वर की ओर से नहीं हो सकता, नहीं तो यीशु पिता की इच्छा के विरोध में लड़ाई कर रहा होता। अत: यह केवल शैतान की ओर से अथवा प्रकृति के काम का परिणाम होगा। परमेश्वर ने कुछ नियमों को बनाया है। एक सेब को ऊपर हवा में फेंकने के बाद वह नीचे आता है, इसलिए नहीं कि परमेश्वर उसे पृथ्वी पर वापस भेजता है बल्कि गुरुत्वाकर्षण के कारण ऐसा होता है। उसने प्रकृति के नियम बनाए हैं। परन्तु शैतान प्राकृतिक तत्वों के साथ काम कर सकता है। अय्यूब अध्याय 1 और 2 में हम पढ़ते हैं कि शैतान परमेश्वर की उपस्थिति में से आया और मौसम के प्रभाव का प्रयोग करके अय्यूब और उसकी सम्पत्ति को नाश करने का प्रयास किया। जब मौसम सम्बन्धी घटनाएं हों तो परमेश्वर को दोषी न ठहराएं, क्योंकि परमेश्वर हर समय भला है। यह मौसम सम्बन्धी घटनाओं के पीछे शैतान का काम हो सकता है अथवा प्रकृति के नियम काम कर रहे होते हैं।

ऐसा नहीं है कि परमेश्वर एक दिन भला है और दूसरे दिन बुरा है। वह सदैव भला परमेश्वर है!

जब यीशु ने तूफान को डाँटा तो उसके बाद अपने चेलों की ओर मुड़कर उसने यह नहीं पूछा कि वे उस दिन कलीसिया में क्यों नहीं गए। जो उसने पूछा वह यह था, ''तुम्हारा विश्वास कहाँ गया?'' भयंकर तूफानों के बीच, वह जानता था कि उसके चेले विश्वास में खड़े होकर इसके ऊपर अधिकार कर सकते थे। इसी प्रकार हममें से कुछ लोग अपने जीवनों में तूफानों से घिर गए हैं और शायद परमेश्वर को दोष दे रहे हैं। परमेश्वर को दोष देना बन्द कर दें! आइए, उनके ऊपर अधिकार लें; खड़े हों और कहें कि हम उन्हें दबाते हैं उस विश्वास के द्वारा जो हमारे भले परमेश्वर में है। यह हमारा भला परमेश्वर नहीं है जो हमारे जीवनों को तूफानों में

डुबोने का कारण होता है। परमेश्वर ने कुछ समय के लिए शैतान को इस पृथ्वी पर काम करने की अनुमति दी है परन्तु उसने हमें छोड़ा नहीं है कि हम असहाय हो जाएं। उसने हमें विश्वास दिया है, एक हथियार जो पहनने के लिए है और अपना वचन जिसके द्वारा हम एक जयवन्त मसीही जीवन जी सकते हैं।

चूंकि परमेश्वर एक न्यायी परमेश्वर है इसलिए एक न्याय और दण्ड की भी धारणा है। परन्तु ये उस समय के लिए हैं जब हम परमेश्वर के नियमों का उल्लंघन करते और उसकी सीमाओं से बाहर जाते हैं।

परमेश्वर की इच्छा है कि हम उसकी आराधना करें क्योंकि वह इसके योग्य है (उसे धन्यवाद दें और उसकी प्रशंसा करें) हम उसके अनुसार जीवन जीते हैं कि वह कैसा है (वह पवित्र है, अत: हमें भी पवित्र होना है, वह भला है अत: हमें भी एक दूसरे के प्रति भला होना है। हमारी जीवन चर्या और व्यवहार हमारे भले परमेश्वर की समानता में होना चाहिए) और हमें उसकी पूर्णता को अनुभव करना है जैसा वह है (वह चाहता है कि हम उसकी पूर्णता प्राप्त करें।) ''क्योंकि उसकी परिपूर्णता से हम सब ने प्राप्त किया अर्थात् अनुग्रह पर अनुग्रह'' (यूहन्ना 1:16)।

हम अपने जीवनों में परमेश्वर की भलाई का अनुभव कर सकते हैं। ''निश्चय भलाई और करुणा जीवन भर मेरे साथ साथ बनी रहेंगी'' (भजन संहिता 23:6अ)।

बाइबल कॉलेज

ऑल पीपुल्स चर्च एवं विश्व सुसमाचार सम्पर्क, बंगलौर, भारत ने अपनी सेवा का विस्तार करते हुए अपना बाइबल कॉलेज एवं सेवा प्रशिक्षण केन्द्र (ए.पी.सी. एवं एम.टी.सी.) अगस्त 2005 में आरम्भ किया है।

ए.पी.सी. एवं एम.टी.सी. विश्वासयोग्य पुरुषों और महिलाओं को तैयार एवं प्रशिक्षित करके भारत देश के गांवों, कस्बों और शहरों में तथा अन्य राष्ट्रों में भेजता है ताकि वे मसीह के लिए उन्हें प्रभावित कर सकें।

APC-BC &MTC अपोस्टोलिक काउंसिल फॉर एजूकेशनल अकाउंटैबिलिटी कोलोराडो स्प्रिंग्स, यू.एस.ए. (www.acea-schools.org) का एक सदस्य संस्थान है। APC-BC &MTC तीन कार्यक्रम प्रस्तुत करता है:

- ❑ दो वर्षीय **बाइबल कॉलेज** कार्यक्रम पूर्ण कालिका छात्रों को आत्मिक और व्यवहारिक सेवा तथा शैक्षणिक गुणवत्ता प्रदान करता है। यह कार्यक्रम इस प्रकार बनाया गया है ताकि छात्रों को प्रशिक्षित एवं सुसज्जित करके सफलतापूर्वक भेजा जाए ताकि वे अपने जीवनों में परमेश्वर की बुलाहट पूरी कर सकें। छात्रों को सफलतापूर्वक प्रशिक्षण पूरा करने के बाद **डिप्लोमा इन थियोलॉजी एवं क्रिश्चियन मिनिस्ट्री** का प्रमाणपत्र दिया जाता है।

- ❑ **व्यवहारिक सेवा प्रशिक्षण** बाइबल कॉलेज के स्नातकों के लिए है जो यह प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहते हैं। जो एक वर्ष या दो वर्ष का प्रशिक्षण पूरा करते हैं उन्हें **सर्टीफिकेट इन प्रैक्टिकल मिनिस्ट्री** का प्रमाण पत्र दिया जाता है जिसमें बिताए गए समय का उल्लेख होता है।

कक्षाएं अंग्रेजी भाषा में संचालित की जाती हैं। प्रशिक्षकगण प्रशिक्षित और वचन के अभिषिक्त गण होते हैं। सभी प्रशिक्षकों और छात्रों को ए.पी.सी अध्ययन केन्द्र और पुस्तकालय को प्रयोग करने की अनुमति होती है। अध्ययन केन्द्र और पुस्तकालय में पुस्तकें, शिक्षा के टेप, वीडियो, VCD और DVD तथा संगीत की सी.डी. उपलब्ध हैं।

ऑल पीपुल्स चर्च के प्रकाशन

स्वर्ग एक वास्तविक स्थान
प्रत्येक बात का एक समय
आत्मिक मन और सांसारिक बुद्धिमान का होना
कार्य के प्रति बाइबल का दृष्टिकोण
व्यक्तिगत और पुरखाओं के बन्धनों को तोड़ना
बदलाव
नगरीय कलीसिया का ईश्वरीय क्रम
अपनी बुलाहट से समझौता न करें
आशा न छोड़ें
अपने जीवन में परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करना
परमेश्वर के उद्देश्यों को जन्म देना
परमेश्वर एक भला परमेश्वर है
परमेश्वर का वचन
अपने पासवान की सहायता कैसे करें?
सच्चाई
यीशु मसीह–शृंखला 1
राज्य को बनाने वाले
चिन्तामुक्त जीवन जीना
हमारा छुटकारा
मन का युद्ध
प्रभु एक योद्धा है
जीवन की अंधेरी रातें
समर्पण की सामर्थ
परखने वाले की आग
बुद्धि प्रकाशन और सामर्थ का आत्मा
भविष्यवाणी को समझना
हम भिन्न हैं
हम मसीह में कौन हैं?
कार्यस्थल पर महिलाएं

सुसमाचारीय पुस्तिकाएं

वह यहाँ है
वह प्रेम जो स्वयं प्रेम से गहरा है
मेरे पाप कैसे धुल सकते हैं?

ऑल पीपुल्स चर्च के विषय में

ऑल पीपुल्स चर्च में हमारा दर्शन यह है कि हम बंगलौर शहर में नमक और ज्योति बनें और भारतवर्ष तथा संसार के अन्य राष्ट्रों के लिए एक आवाज बनें।

हम ए.पी.सी. चर्च में सम्पूर्ण, बिना समझौते के और उसके पवित्रात्मा के प्रदर्शन के साथ प्रस्तुत करने हेतु समर्पित हैं। हम यह विश्वास करते हैं कि अच्छा संगीत, सृजनात्मक प्रदर्शन, तेज़ प्रार्थना, तत्कालीन सेवा के तौर तरीके आदि परमेश्वर के वचन को पवित्रात्मा की सामर्थ में वचन के प्रचार तथा चिन्ह, चमत्कार और पवित्रात्मा के वरदानों का विकल्प नहीं बन सकते हैं (1 कुरिन्थियों 2:4,5; इब्रानियों 2:3,4)। **हमारी विषय वस्तु यीशु है, हमारा विषय वचन है, हमारा तरीका पवित्रात्मा की सामर्थ है, हमारी लगन लोग हैं और हमारा उद्देश्य मसीह के समान परिपक्वता है।**

क्योंकि हम अपने को नहीं, परन्तु मसीह यीशु को प्रचार करते हैं, कि वह प्रभु है; और अपने विषय में यह कहते हैं, कि हम यीशु के कारण तुम्हारे सेवक हैं। जिसका प्रचार करके हम हर एक मनुष्य को जता देते हैं और सारे ज्ञान से हर एक मनुष्य को सिखाते हैं, कि हम हर एक व्यक्ति को मसीह में सिद्ध करके उपस्थित करें (2 कुरिन्थियों 4:5; कुलुस्सियों 1:28)।

हम विश्वास करते हैं कि इस पुस्तक को पढ़ने के द्वारा आपको आशीष मिली होगी। यह हमारी ओर से आपके लिए एक भेंट है। यह मुफ्त है!

हजारों प्रतियाँ आप जैसे लोगों को मुफ्त में बांटी जाती हैं। हम चाहते हैं कि आप हमारे आर्थिक सहयोगी बनें ताकि हम परमेश्वर का वचन बहुतों के साथ बांट सकें। आपके लगातार आर्थिक अनुदानों से हमें परमेश्वर का वचन अन्य लोगों तक पहुंचाने में सहायता मिलेगी। जैसा प्रभु आपको अगुवाई करे, आप ऑल पीपुल्स चर्च के सहयोगी बन सकते हैं। आप अपने दान के चैक / डिमाण्ड ड्राफ्ट / मनीआर्डर **''ऑल पीपुल्स चर्च, बंगलौर''** के नाम भेज सकते हैं। जब आप हमें लिखें तो आप अन्य प्रकाशनों हेतु भी निवेदन करें। हमें यह भी लिखें कि इस पुस्तक ने आपकी कैसे सेवा की है, साथ ही अपने प्रार्थना निवेदन और टिप्पणी भी भेजें।

आप हमें निम्न पते पर सम्पर्क कर सकते हैं:

ऑल पीपुल्स चर्च

सोभा जेड A216

जक्कूर, बंगलौर-560064

कर्नाटक, भारत

फोन + 91-80-23544328

ईमेल : contact@apcwo.org

बेबसाइट : www.apcwo.org

भारत में ऑल पीपुल्स चर्च

इस समय ऑल पीपुल्स चर्च की शाखाएं भारत में निम्नलिखित शहरों में हैं :

ऑल पीपुल्स चर्च–बंगलौर (कर्नाटक)

ऑल पीपुल्स चर्च–थोकोटू, मंगलौर (कर्नाटक)

ऑल पीपुल्स चर्च–कल्याण, मुम्बई (महाराष्ट्र)

ऑल पीपुल्स चर्च–विशाखापटनम (आन्ध्र प्रदेश)

ऑल पीपुल्स चर्च–सोनितपुर (आसाम)

ऑल पीपुल्स चर्च–बेरहामपुर (उड़ीसा)

ऑल पीपुल्स चर्च–नागपुर (महाराष्ट्र)

समय समय पर पूरे भारत में नई कलीसियाओं की स्थापना की जा रही है। वर्तमान सूची और ऑल पीपुल्स चर्च की सम्पर्क सूचना प्राप्त करने हेतु कृपया हमारे बेबसाइट www.apcwo.org पर देखें अथवा contact@apcwo.org पर ईमेल भेजें।

क्या आप उस परमेश्वर को जानते हैं जो आपको प्यार करता है?

लगभग 2000 वर्ष पहले परमेश्वर इस संसार में एक मनुष्य बनकर आए। उनका नाम यीशु है। उन्होंने पूर्ण पापरहित जीवन जीया। चूँकि यीशु मानव रूप में परमेश्वर थे, उन्होंने जो कुछ कहा और किया उसके द्वारा हमारे समक्ष परमेश्वर को प्रकट किया। उन्होंने जो वचन कहे वे परमेश्वर के ही वचन थे। जो कार्य उन्होंने किये वे परमेश्वर के कार्य थे। यीशु ने बहुत से चमत्कार इस पृथ्वी पर किये। उन्होंने बीमारों और पीड़ितों को चंगा किया। अंधों को आंखें दीं, बहिरों के कान खोले, लंगड़ों को चलाया और हर प्रकार की बीमारी और रोग को चंगा किया। उन्होंने चमत्कार करके कुछ रोटियों से बहुतों को खाना खिलाया था। तूफान को शान्त किया और अन्य बहुत से अद्भुत काम किए।

ये सभी कार्य हमारे समक्ष यह प्रकट करते हैं कि परमेश्वर एक भला परमेश्वर है जो यह चाहता कि मनुष्य ठीक, स्वस्थ और प्रसन्न रहें। परमेश्वर मनुष्यों की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करना चाहता है।

परमेश्वर ने मानव बनकर इस पृथ्वी पर आने का निश्चय क्यों किया? यीशु इस संसार में क्यों आए?

हम सबने पाप किया है और ऐसे काम किए हैं जो परमेश्वर के समक्ष ग्रहण योग्य नहीं हैं जिसने हमें बनाया है। पाप के परिणाम होते हैं। पाप एक बड़ी दीवार की तरह परमेश्वर और हमारे बीच में खड़ी है। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है। वह हमें उसे जानने और उससे अर्थपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने से रोकता है जिसने हमें बनाया है। अत: हममें से बहुत से लोग इस खालीपन को अन्य वस्तुओं से भरना चाहते हैं।

हमारे पापों का एक और परिणाम यह है कि हम परमेश्वर से सदा के लिए दूर रहते हैं। परमेश्वर के न्यायालय में पाप का दण्ड मृत्यु है। मृत्यु परमेश्वर से सदा के लिए अलगाव है जो हमें नर्क में बिताना पड़ेगा।

परन्तु शुभ समाचार यह है कि हम पाप से मुक्त होकर परमेश्वर से सम्बन्ध रख सकते हैं। बाइबल कहती है, **''पाप की मजदूरी (भुगतान) तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है''** (रोमियों 6:23)। यीशु ने सारे संसार के पापों के लिए मूल्य चुकाया जब उसने क्रूस पर अपने प्राण दिये। तब तीसरे दिन वह जीवित हो गए, बहुतों को उन्होंने अपने आपको जीवित दिखाया और तब वह वापस स्वर्ग चले गए।

परमेश्वर प्रेम और दया का परमेश्वर है। वह नहीं चाहता कि कोई भी नर्क में नाश हो। इसलिए वह आया ताकि सारी मानव जाति को पाप से छुटकारे और उसके अनन्त परिणामों से बचा सके। वह पापियों को बचाने– आप और मुझ जैसे लोगों को पाप और अनन्त मृत्यु से बचाने आया था।

पाप की निशुल्क क्षमा प्राप्त करने के लिए बाइबल हमें बताती है कि हमें केवल एक काम करना है–जो कुछ उसने क्रूस पर किया उसे स्वीकार करना और उस पर पूर्ण हृदय से विश्वास करना है।

जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी (प्रेरितों के काम 10:43)।

यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा (रोमियों 10:9)।

आप भी अपने पापों की क्षमा और उनसे छुटकारा पा सकते हैं यदि आप प्रभु मसीह पर विश्वास करें।

निम्नलिखित एक साधरण प्रार्थना है ताकि इससे आपको यह फैसला करने में और प्रभु यीशु मसीह के द्वारा आपके लिए किए क्रूस के कार्य पर विश्वास करने में सहायता कर सके। यह प्रार्थना आपकी सहायता करेगी कि आप यीशु के कार्य को स्वीकार करके अपने पापों की क्षमा और उनसे छुटकारा पा सकें। यह प्रार्थना मात्र एक मार्गदर्शिका है। आप अपने शब्दों में भी प्रार्थना कर सकते हैं :

प्रिय प्रभु यीशु, आज मैंने समझा है कि आपने मेरे लिए क्रूस पर क्या किया था। आप मेरे लिए मारे गए! आपने अपना बहुमूल्य रक्त बहाया और मेरे पापों की कीमत चुकाई ताकि मुझे पापों की क्षमा मिले। बाइबल मुझे बताती है कि जो कोई आप में विश्वास करता है उसे उसको पापों की क्षमा मिलती है।

आज मैं आपमें विश्वास करने और जो कुछ आपने मेरे लिए किया है, उसको स्वीकार करने का फैसला करता हूँ, कि आप क्रूस पर मारे गए और फिर जीवित हो गए। मैं जानता हूँ कि मैं अपने आपको अच्छे कामों के द्वारा नहीं बचा सकता हूँ। मैं अपने पापों की क्षमा कमा नहीं सकता हूँ।

आज मैं अपने हृदय में विश्वास करता हूँ और मुँह से कहता हूँ कि आप मेरे लिए मारे गए। आपने मेरे पापों का दण्ड चुकाया। आप मृतकों में से जीवित हो गए और आपमें विश्वास करने के द्वारा मैं अपने पापों की क्षमा और पाप से छुटकारा प्राप्त करता हूँ।

प्रभु यीशु धन्यवाद। मेरी सहायता करें कि मैं आपको प्रेम कर सकूँ। आपको और अधिक जान सकूँ और आपके प्रति विश्वासयोग्य रह सकूँ। आमीन!